बिहार की संगीत साधना

बिहार की लोक विभूतियों में सर्वश्रेष्ठ भगवान बुद्ध को ज्ञान मिला था कि वीणा के तारों को इतना मत कसो कि वह टूट जाय और इतना ढीला भी मत करो कि उससे संगीत ही न निकले। इससे इतना तो प्रमाणित हो ही जाता है कि बुद्ध के काल का बिहार वीणा के मर्म से पूरी तरह परिचित था। चाणक्य ने गायन तथा नृत्य में प्रवीण गणिकाओं के राज्य द्वारा संरक्षण का विधान अपने अर्थशास्त्र में किया है। प्रमाण मिलते हैं कि सम्राट समुद्रगुप्त वीणा बजाने में इतने प्रवीण थे कि विशेषज्ञ उन्हें 'संगीत मार्तण्ड' कहा करते थे। कबीरदास, सूरदास तथा तुलसीदास के पदों के साथ विभिन्न रागों का निर्देश भी मिलता है। मिथिला के राजा हरि सिंह देव के दरबारी आचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर के ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर' में संगीतशास्त्र का विस्तार से उल्लेख मिलता है। हर्षवर्धन के काल के भोजपुर जिले के निवासी कवि वाणभट्ट ने लोक संगीत के गायन का उल्लेख किया है। तात्पर्य यह कि प्राचीन बिहार में लोक संगीत से लेकर शास्त्रीय संगीत तक के विविध रूप कवियों से लेकर पेशेवर नृत्यांगनाओं तक और संतों से लेकर राजाओं तक में सम्मानित थे। मुगल साम्राज्य के बिखरने के बाद तानसेन के दर्जनों शिष्यों की मंडलियाँ देश के विभिन्न भागों में गई थीं। उनमें अनेक को बेतिया, दरभंगा, डुमराँव, बनैली, टेकारी, गिद्धौर और तमकुटी के राजदरबारों में सम्मानपूर्ण आश्रय मिला था। उन संगीतकारों ने बिहार में शास्त्रीय संगीत के अनेक अंतरराष्ट्रीय ख्याति के कलावंत पैदा किये। उस काल में बिहार की अपनी ध्रुपद गायन की परंपरा थी और पं० शिवदयाल मिश्र जैसे ध्रुपद गायक नेपाल से भी आये थे।

ध्रुपद के ध्रुव पं० रामचतुर मल्लिक

© CBSE NOT TO BE RE

बिहार का शास्त्रीय योगदान **ध्रुपद, ख्याल** और **ठुमरी** के गायन में सबसे बड़ा माना जाता है। इन तीनों गायनों में बिहार के गायकों ने अनेक नये रागों का भी आविष्कार किया था। वैदिककाल से ही चली आ रही शास्त्रीय संगीत-धारा में समय-समय पर विकसित नयी-नयी अनेक धाराओं में एक प्रमुख **ध्रुपद** भी है। ग्वालियर नरेश मानसिंह के दरबार में ध्रुपद का भरपूर विकास हुआ था और तानसेन भी ध्रुपद के महारथी थे, परंतु मुगल साम्राज्य के पतन के बाद बिहार के दरभंगा, बेतिया तथा डुमराँव घराने में इसका अभूतपूर्व विकास हुआ। बेतिया के राजा गज सिंह ने ध्रुपद गायक चमारी मलिक और कंगाली मलिक को कुरुक्षेत्र के निकट से लिवा लाकर अपने दरबार में रखा था। उस समय से ही ध्रुपद गायन में बेतिया घराने का प्रारंभ होता है। नेपाल से आये ध्रुपद गायक आचार्य शिवदयाल मिश्र की परंपरा भी बेतिया में विकसित हुई। ध्रुपद के इन आचार्यों के जमाने में उत्तर प्रदेश तथा बंगाल से भी ध्रुपद की शिक्षा पाने के लिए प्रशिक्षु कलाकार आया करते थे। राजदरबार के अलावा बेतिया के अनेक परिवार भी ध्रुपद के गायन बन चुके थे। बेतिया घराने के ध्रुपद गायकों में कुंज बिहारी मलिक, श्यामा मलिक, उमाचरण मलिक, गोरख मिश्र, महंथ मिश्र, बच्चा मलिक, शंकर लाल मिश्र और काले खाँ प्रमुख रहे हैं। 1936 ई० में मुजफ्फरपुर में जो अखिल भारतीय संगीत समारोह हुआ था उसमें कुंज बिहारी मिश्र के ध्रुपद गायन की खूब सराहना हुई थी। बेतिया के राजा आनंद किशोर (1816 ई०), नवल किशोर (1833 ई०) और राजेन्द्र किशोर (1855 ई०) ध्रुपदियों के आश्रयदाता होने के साथ ही स्वयं भी उच्च कोटि के ध्रुपद गायक थे।

ध्रुपद गायक पं० सियाराम तिवारी

©BSTBC NOT TO BE PRINTED

ध्रुपद गायन की परंपरा में दरभंगा घराने को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। उस घराने के पं० रामचतुर मलिक को ध्रुपद का ध्रुव कहा जाता है। प्रसिद्ध संगीत आलोचक श्री गजेन्द्र नारायण सिंह का मत है कि वर्तमान ध्रुपद गायकों में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ है।

दरभंगा घराना तथा डुमराँव घराना दोनों का मूल रोहतास जिले का धनगाँई गाँव रहा है। दरभंगा के ध्रुपद गायक छितिपाल मलिक के पूर्वज तेरह पीढ़ी पूर्व दरभंगा गये थे और वहाँ ध्रुपद गायन की परंपरा डाली थी। छितिपाल मलिक के शिष्य और संबंध में भतीजा रामचतुर मलिक ध्रुपद में तो सर्वोच्च हुए ही, ठुमरी तथा दादरा गायन में भी उन्होंने महारत हासिल की थी। रामचतुर जी का जन्म 1805 या 07 ई० में आमता (दरभंगा) में हुआ था और 1990 ई० में उनका परलोकवास हुआ। गया जिले के मूल निवासी पं० सियाराम तिवारी दूसरे अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ध्रुपद गायक हैं। इनके ध्रुपद गायन का विकास दरभंगा के विष्णुदेव पाठक तथा जमीरा (भोजपुर) के लल्लन सिंह जैसे पखावजवादकों की देख-रेख में हुआ। विष्णुदेव पाठक सियाराम तिवारी के नाना और पखावज के प्रसिद्ध वादक थे। पं० सियाराम तिवारी ख्याल तथा ठुमरी के भी उच्चस्तरीय गायक माने जाते हैं। दरभंगा घराने के ही पं० रघुवीर मलिक और पं० विदुर मलिक प्रसिद्ध ध्रुपद गायकों में हैं।

शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

धनगाँई के ध्रुपद परिवारों का संबंध डुमराँव के राजघराने से था, इसलिए उन्हें डुमराँव घराना के नाम से प्रसिद्धि मिली। डुमराँव वर्तमान बक्सर जिले में पड़ता है। धनगाँई के पं० धनारंग दुबे (1819 ई०) डुमराँव राजदरबार के सम्मानित गायक और उच्च कोटि के कवि भी थे। प्रसिद्ध गायक बच्चू दुबे उनके शिष्य थे। बच्चू दुबे की परंपरा में पं० सुदीन पाठक (गया), पं० विश्वनाथ पाठक (भड़सर, बलिया), जैमिनी पाठक और धनगाँई के ही रघुनंदन दुबे, सहदेव दुबे तथा रामप्रसाद पाण्डेय ने विशेष ख्याति पाई। एक अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में पं० रामप्रसाद पाण्डेय के गायन से कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर गहरे प्रभावित हुए थे और उनकी खूब प्रशंसा की थी।

शास्त्रीय गायन में एक रूप होता है **ख्याल**। बिहार ने गायन के इस अत्यंत लोकप्रिय रूप

को उल्लेखनीय ऊँचाइयाँ प्रदान की थीं। ख्याल गायन में बनैली राज के कुमार श्यामानन्द सिंह ने सर्वाधिक प्रसिद्धि पाई। श्यामानन्द सिंह एक राजा थे, उच्च कोटि के संगीत प्रेमी थे, बिलियर्ड नामक खेल के राज्यस्तरीय चैम्पियन थे और एक शांत तथा सरल चित्त वाले ऐसे इंसान थे जिनके राजदरबार में गुणियों की उन्मुक्त कद्र होती थी। अपनी कार से एक बार दार्जिलिंग जा रहे श्यामानन्द सिंह ने कहीं पं० भीष्मदेव चटर्जी का रिकार्ड सुना और उससे संगीत सीखने की जगी इच्छा की उत्कटता ने उन्हें चटर्जी साहब का शिष्य बना दिया। बाद में उन्होंने भोलानाथ भट्ट, मुजफ्फर खाँ, महावीर मल्लिक, मुबारक अली खाँ आदि से भी संगीत के विभिन्न पक्षों की शिक्षा ली। बिहार के ख्याल गायकों में मुंगेर के पं० चंद्रशेखर खाँ, बेतिया के जाकिर हुसैन और उस्ताद मौजूद हुसैन आदि के नाम भी महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

तबला वादक श्री विजय ठाकुर

संगीत शास्त्रियों का मत है कि ठुमरी का उद्‌भव ही बिहार और उत्तर प्रदेश की अपनी धरती से हुआ। गया, वाराणसी तथा अवध में विशेष रूप से विकसित हुई ठुमरी को शायद इसलिए ही पूरब की गायकी भी कहा जाता है।

ठुमरी के अनेक आचार्य और उस्ताद गया में पैदा हुए जिनमें जगदीप मिश्र, गुलमोहम्मद खाँ, रामप्रसाद मिश्र उर्फ रामू जी और उनके पुत्र गोवर्धन मिश्र ने ठुमरी गायन को जो प्रतिष्ठा दिलाई वह बिहार की संगीत-साधना की मूल्यवान उपलब्धि है। इस क्रम में सहरसा के मांगन खवास के ठुमरी गायन को तो सर्वश्रेष्ठ तक बताया जाता है।

वर्तमान पटना साहिब को पहले पटना सिटी और अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में अजीमाबाद कहा जाता था। अजीमाबाद में पेशेवर नर्तकी जोहरा के ठुमरी गायन की धूम सबसे ज्यादा थी। दरभंगे की गौहर और भागलपुर की कज्जन ने भी ठुमरी गायन में प्रसिद्धि पायी थी परंतु इस गायन का सबसे अधिक विकास पटने की नर्तकियों के बीच हुआ। गया की ढेलाबाई तथा मुजफ्फरपुर की पन्ना बाई की ठुमरी और दादरा के गायन की यादें भी संगीताचार्य बड़े आदर के साथ करते हैं।

बिहार की ठुमरी में संवेदना तथा कल्पना का जैसा सहज और मधुर समावेश रहता है वैसा अन्य क्षेत्रों के रूपों में नहीं मिलता। रामूजी (रामप्रसाद मिश्र) के गायन में ये विशेषताएँ साकार हो आती थीं। कहा जाता है कि पूर्वीय क्षेत्र की आत्मा ठुमरी में बसती है और रामूजी उस ठुमरी में प्राण फूँकने वाले गायकों में सर्वश्रेष्ठ थे।

बिहार के गंभीर संगीत साधकों में बिन्दा प्रसाद गौड़, पं० विदुर मलिक और प्रसिद्ध लोक गायिका शारदा सिन्हा के गुरु पं० रघु झा एवं पं० सीताराम हरि डाण्डेकर के नाम भी उल्लेखनीय रहे हैं।

©BSTBPC
NOT TO BE PRINTED

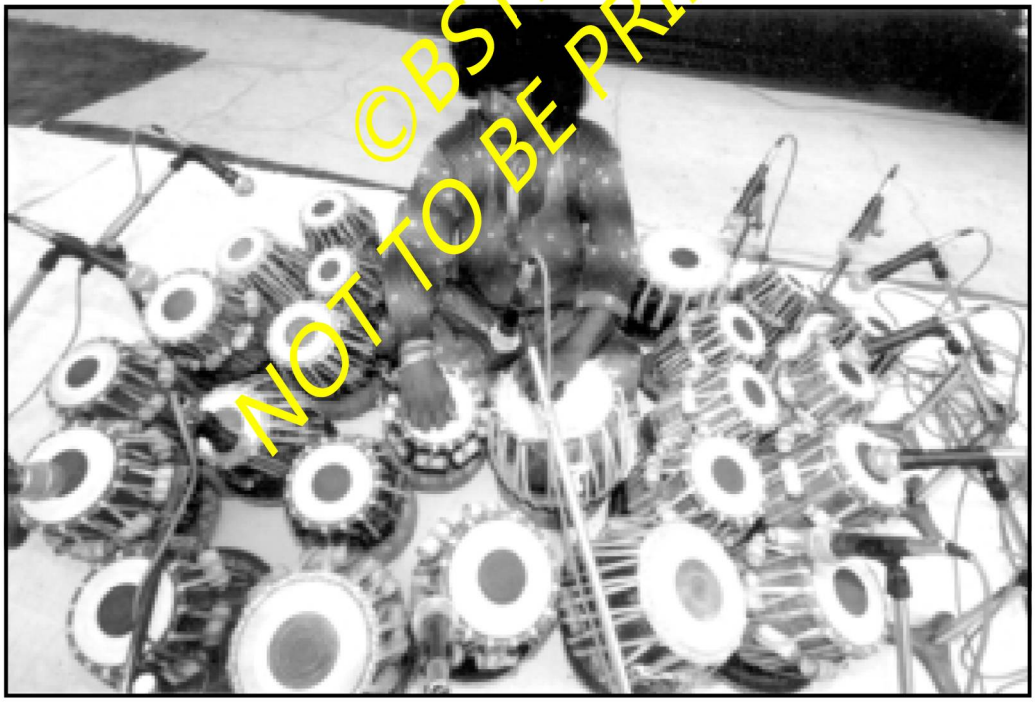

तबले पर श्री अजय ठाकुर

बिहार की धरती ने गायन के विभिन्न विभागों को सप्राणता देने के साथ ही विभिन्न वाद्ययंत्रों को भी अपनी साधना तथा मौलिक प्रतिभा से सजाया है। पखावज, सारंगी, इसराज, सितार, सरोद, शहनाई, तबला, बाँसुरी आदि के एक से बढ़कर एक कलाकार बिहार में पैदा हुए। उनमें बहुतों को प्रसिद्धि भी मिली परंतु अधिकांश अपनी एकांत साधना के साथ स्वर्ग सिधार गये।

पखावज मृदंग का ही दूसरा नाम है। बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक पखावजी (मृदंगवादक, मृदंगी) हो चुके हैं जिनमें ध्रुपद के सर्वमान्य गुरु क्षितिपाल मलिक के शिष्य विष्णुदेव पाठक (1897 ई०) का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। ध्रुपद गायक पं० सियाराम तिवारी के दो गुरुओं में पहले विष्णुदेव पाठक अपने पखावजवादन के लिए ही प्रसिद्ध थे और दूसरे भोजपुर जिले के जमीरा निवासी शत्रुंजय प्रसाद सिंह उर्फ लल्लन बाबू थे। लल्लन बाबू को जिन्होंने सुना है वे बताते हैं कि वे "या कुन्देन्दु तुषार हार धवला।" (सरस्वती वंदना) को अपने पखावज से शब्दशः ध्वनित कर देते थे। लल्लन बाबू ने तबला वादन तथा कथक नृत्य में भी कुशलता पाई थी। पखावज बजाने वालों में रामाशीष पाठक को अच्छी ख्याति मिली है। रामाशीष पाठक के भी पखावज गुरु विष्णुदेव पाठक ही थे।

ठुमरी गायक मांगन खवास

सारंगी भारतीय संगीत का अपना तन्तुवाद्य रहा है। आज इसकी लोकप्रियता बहुत घट गई है परंतु पिछली शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक संगीत जगत में इसकी सर्वमान्य प्रतिष्ठा हुआ करती थी। बिहार के प्रसिद्ध सारंगीवादकों में मियाँ बहादुर खाँ, किशोरी प्रसाद मिश्र, शिवदास मिश्र (छपरा), हाकिम मिश्र, हीरा गुरु (पटना सिटी) आदि के नाम विशेष प्रशंसा के साथ लिये जाते हैं।

बिहार में इसराज जैसे विलक्षण और विरल तंतुवाद्य के पंडित चंद्रिका दुबे जैसे राष्ट्रीय ख्याति के वादक हो चुके हैं। औरंगाबाद जिले के पवई ग्राम के दुबे जी के इसराज वादन की प्रशंसा रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक कर चुके थे। उनके गुरु गया के कन्हाई लाल ठंठी अपने समय के अद्वितीय इसराज वादक थे। गया में लगभग आधे दर्जन इसराजवादक हो चुके हैं और उन्हें ख्याति भी मिली परंतु भोजपुर जिले के बभनिआँव गाँव निवासी पं० द्वारिका मिश्र इस तंतुवाद्य के विशेष ज्ञाता होने के बावजूद अलक्षित ही गुजर गए। उन्होंने शांतिनिकेतन में इसराज की शिक्षा पाई थी। आज इसराज विलुप्ति के कगार पर है।

बिहार में सितारवादन के एक महान साधक थे सुदीन पाठक। ऐसे एकांत साधक कि रात में कमरे में बंद हो सितार बजाना प्रारंभ करते और भोर होने से पूर्व साधना को विराम देते हुए सितार के तार खोलकर रख देते थे। अपने जाने उन्होंने कभी किसी को न शिष्य बनाया और न ही बाहर में कभी प्रस्तुति दी। सितार वादन में बिहार के गौरव पुरुष पं० रामेश्वर पाठक ने एकलव्य की कहानी दुहरा दी। जब सुदीन पाठक रात्रि में सितारवादन प्रारंभ करते तो किशोर रामेश्वर पाठक बंद खिड़की के बाहर खड़े ध्यान से उनका बजाना सुनते रहते-सीखते रहते। इस तरह सुदीन पाठक के अनजाने में ही उनका एक ऐसा शिष्य तैयार हो गया जिसने उनके नाम को अमर कर दिया। विश्वप्रसिद्ध सितारवादक पं० रविशंकर पं० रामेश्वर पाठक को अपना आदर्श मानते हैं। रामेश्वर पाठक महना ग्राम (मुंगेर) के सितारवादक अनूप पाठक के सुपुत्र तथा अमता (दरभंगा) के सितारवादक राजकुमार मलिक के दौहित्र (नाती) थे।

सितार के साथ संगीत कुमार नाहर

बिहार ने गया के पंडा कमल लाल भइया, बिहारी लाल टाटक, विश्वनाथ भट्ट और उनके गुरु मुराद अली खाँ के साथ ही दरभंगे के असगर अली खाँ जैसे सरोदवादक दिये हैं। बिहार में तबला की भी पुष्ट परंपरा रही है। वर्तमान में पटने के अजय ठाकुर का संपूर्ण परिवार तबले का पर्याय बना हुआ है। पूर्व में प्रसिद्ध तबलावादक जहाँगीर खाँ के पिता दरभंगा राजघराने के सम्मानित तबलावादक थे। तबले की लोकप्रियता प्राय: पूरे बिहार में रही है, फिर भी दरभंगा तथा पटने का योगदान विशेष उल्लेख की माँग करता है।

बिहार के मिट्टी-पानी ने डुमराँव में 1914 ई० में विस्मिल्ला खाँ नामक एक बालक को पैदा किया था जो आगे चलकर विश्व का सर्वश्रेष्ठ शहनाईवादक बना। विस्मिल्ला खाँ बाद में वाराणसी में बस गये थे परंतु अपनी पैतृक जन्मभूमि डुमराँव राजदरबार के बिहारी जी के मंदिर में बचपन में वे शहनाई बजाया करते थे। बिस्मिल्ला खाँ वाराणसी में बस गये थे और वहीं आजन्म अपनी साधना में रत रहे परंतु जन्मभूमि डुमराँव से उनकी आत्मीयता कभी टूटी नहीं।

बाँसुरीवादक मुज्तबा हुसैन शहनाई तथा बाँसुरी के अपने समय के सिद्ध उस्ताद पीरबक्श के पुत्र हैं। इनके चाचा फहीमुल्ला खाँ ने बाँसुरीवादन को ऊँचाई प्रदान कर जानकारों की खूब प्रशंसा पाई थी परंतु उन्हें अपेक्षित प्रसिद्धि नहीं मिल पाई। मुज्तबा हुसैन ने सन् 1990 में ऑल इंडिया इंटर कॉलेजिएट सांस्कृतिक समारोह में स्वर्णपदक पाया था।

शास्त्रीय गायन-वादन की लोकप्रियता में गिरावट आई है, फिर भी बिहार के अनेक संगीत साधकों ने विभिन्न पक्षों में बिहार की कीर्ति को आगे बढ़ाया तथा संगीत-साधना की संभावनाओं को बल प्रदान किया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बिहार सरकार संगीत के लिए एक महाविद्यालय स्थापित करे जिसमें संगीत के विविध रूपों, अंगों और पक्षों की व्यावहारिक शिक्षा छात्र पा सकें और पुनः बिहार को गौरवान्वित कर सकें।

आज संगीत में पं० गोवर्धन मिश्र, अभय नारायण मल्लिक, संगीत कुमार नाहर, रामजी मिश्र (डुमराँव घराना), इंद्रकिशोर मिश्र (बेतिया घराना) और प्रेम कुमार मल्लिक ने देश-विदेश में अच्छी प्रसिद्धि पाई है। राजकुमार नाहर, सुधीर पाण्डेय, योगेन्द्र नारायण यादव, विनोद पाठक आदि ने तबलावादन के वैभव को बचाया है तो आशीष चटर्जी तथा अशोक पाठक ने सितार के तारों से अपनी भूमि के रिश्ते को आज भी जोड़ रखा है। बद्री प्रसाद मिश्र के तीनों पुत्र प्रह्लाद प्रसाद मिश्र, पं० केदारनाथ मिश्र और पं० रामनरेश मिश्र ने संगीत के पैतृक वैभव की समुचित रक्षा की है। प्रह्लाद मिश्र के पुत्र संगीत कुमार नाहर (1956 ई०) ने ख्याल गायन में उच्चस्तरीयता प्राप्त की है तो पं० रामनरेश मिश्र के पुत्र राजकुमार नाहर (1969 ई०) ने तबलावादन में नयी पीढ़ी को गौरवान्वित किया है और प्रह्लाद मिश्र के छोटे पुत्र संतोष कुमार नाहर ने वायलिनवादन में उल्लेखनीयता पायी है। इसराज के गिने-चुने वादकों में एक हरेन्द्र दुबे ने अपने पितामह पं० चंद्रिका दुबे की परंपरा को आगे बढ़ाया है।

अभ्यास

1. समुद्रगुप्त कौन थे? वे किस वाद्य को बजाने में प्रवीण थे?
2. बिहार में शास्त्रीय संगीत के कितने और कौन-कौन से रूप विशेष प्रचलित रहे हैं?
3. बेतिया घराना का एक संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. दरभंगा घराना के सर्वश्रेष्ठ गायक कौन माने जाते हैं?
5. धनगाँई ग्राम कहाँ पड़ता है? बिहार की शास्त्रीय संगीत परंपरा में उस गाँव का क्या महत्त्व है?

6. जमीरा गाँव के संगीत साधक कौन थे? उनकी क्या विशेषता थी?

7. श्यामानंद सिंह कौन थे? संगीत के प्रति उनमें कैसे रुचि जगी थी?

8. संगीत में डुमराँव के योगदान पर एक टिप्पणी लिखें।

9. सुदीन पाठक किस बाजा के विशेषज्ञ थे? उनकी स्वभावगत विशेषता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

10. अपने गाँव-नगर और आस-पास के शास्त्रीय संगीत साधकों के परिचय लिखकर विद्यालय की सांस्कृतिक गोष्ठी में पाठ करें।

जानकी उद्‌भव
फणीभूषण विश्वास की एक प्रसिद्ध मूर्ति